पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में राजेन्द्र यादव के उपन्यासों का अध्ययन

मीरा
शोध छात्रा – हिंदी
आगरा कॉलेज, आगरा।

शोध–सार

समाज में मनुष्य कभी–भी एकांकी जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। उसे सदैव दूसरों के साथ की आवश्यकता होती है। जिससे वह अपनी जीवन रूपी गाड़ी को सुचारु रूप से चला सके। इसलिए वह समाज में रहते हुए किसी–न–किसी रूप में सदैव एक–दूसरे से सम्बद्ध व निर्भर रहता है। चाहे वह पारिवारिक परिप्रेक्ष्य के रूप में हो या सामाजिक परिप्रेक्ष्य के रूप में। राजेन्द्र यादव ने अपने समस्त कथा–साहित्य में इन्हीं मध्यवर्गीय सम्बन्धों को उजागर किया है।

शब्द बीज – सम्बद्ध, स्वीकृति, संबध, अभिशप्त, क्षुब्ध, आत्मभर्त्सना, दुविधा

प्रस्तावना

परिवार समाज की एक ऐसी इकाई है, जहाँ मानव की सहज मनोवृत्तियाँ फलीभूत होती है। उसे अपने सम्बन्धों को पूर्ण करने व उन्हें सुखपूर्वक निभाने के लिए परिवार की आवश्यकता होती है। परिवार के अन्तर्गत रहकर ही वह अपनी सम्पूर्ण इच्छाओं को पूर्ण करता है। परिवार ही एक ऐसी संस्था है, जहाँ व्यक्ति मिल–जुलकर रहता है व विवाह जैसे पवित्र अनुष्ठान का पूर्ण रूप से पालन करता है। पारिवारिक जीवन का आरंभ पति–पत्नी के सम्बन्धों से माना जाता है। पति–पत्नी परिवार का वह मूल आधार तत्व है जो सामाजिक स्वीकृति से संतानोत्पत्ति द्वारा एक परिवार को मूर्त रूप देते है। पति–पत्नी के साथ–साथ वह माता–पिता बनते है। संतान विवाह के पश्चात् वह सास–श्वसुर जैसे नए रिश्ते को जन्म देते है। इसी तरह परिवार में कई नये रिश्ते जन्म लेते जाते है। जिसके रूप में एक पूरा परिवार खड़ा होता है। इसी परिवार से जुड़े पहले सम्बन्ध को दाम्पत्य सम्बन्ध के अन्तर्गत रखा जाता है।

क. दाम्पत्य संबंध

दाम्पत्य सम्बन्ध गृहस्थ–जीवन का मूल आधार है। जिसका आरम्भ वैवाहिक जीवन के पश्चात् होता है। विवाह एक सामाजिक स्वीकृति है, जिसके माध्यम से एक स्त्री व पुरूष मिलकर दाम्पत्य जीवन का आरम्भ करते है। दाम्पत्य संबंध से आशय केवल पति–पत्नी के इकट्ठे रहकर अपनी यौन इच्छाओं

को सन्तुष्ट करना ही नहीं बल्कि संतानोंत्पत्ति करके वंश वृद्धि भी करना होता है। ये संबंध पति–पत्नी के प्रेम व नोंक–झोंक से परिपूर्ण होता है। ये संबंध अच्छे–बुरे, मधुर व कटु होते है। अपने इस संबंध की मधुरता बनाए रखने के लिए पति–पत्नी में आपसी समझ व विश्वास का होना अति आवश्यक है।

मध्यवर्गीय परिवारों में स्थान का अभाव होने के कारण नव दम्पति हमेशा एकांत स्थान को ढूँढते है। जिससे कि वे एक दूसरे को समझ सके व उनका रिश्ता प्रगाढ़ हो सके। अपने दाम्पत्य जीवन को बनाए रखने के लिए एक स्त्री ही हमेशा कोशिश करती है। जिस प्रकार **'एक इंच मुस्कान'** में अमला अमर से मिलने जाने से पहले कैलाश को सूचित करना ठीक समझती है, अन्यथा कैलाश उसे नहीं समझेगा – **''कैलाश को फोन करना है, नहीं तो वह घूमने निकल जाएगा। वह जानती है कि साथ न जाने की बात सुनकर ही कैलाश नाराज होगा.... और कारण जानकर तो बस, भभक ही उठेगा। साधारण लोगों से मिलना जुलना, उनके साथ बराबरी का व्यवहार करना कैलाश को कतई पसंद नहीं।''**[1] पुरूष अपने साथी से विश्वास की कामना करता है, लेकिन स्वयं उस पर विश्वास नहीं करता और उसे अपनी इच्छानुसार चाहता है।

किसी तीसरे व्यक्ति के जीवन में प्रवेश होने से दाम्पत्य संबंधों में खटास आ जाती है। चाहे वह पुरूष हो या स्त्री। ऐसा ही रंजना के साथ होता है व उसका दाम्पत्य संबंध टूट कर बिखर जाता है।

अमर के जीवन में अमला के आ जाने से वह रंजना से सभी सच्चाई छिपाने लगता है। अमला अमर को लिखने के लिए प्रेरित करती है, उसकी आर्थिक रूप से मदद करती है व पत्र व्यवहार बनाए रखती है। अमर उन पत्रों को रंजना से छिपाकर रखता है। जिससे रंजना का विश्वास टूट जाता है और वह अमर को छोड़कर जाने का फैसला कर लेती है। जिसका अमर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह अपनी कला को अधिक महत्व देते हुए कहता है – **''रंजना ईष्यालु पत्नी हो सकती है लेकिन कला सबसे ज्यादा ईष्यालु पत्नी है और जो एक बार इस पत्नी से गठबंधन कर लेता है, उसके सामने सिर्फ एक ही विकल्प होता है – या तो इस पत्नी के साथ रहे या एकदम उसे छोड़ दे।''**[2]

इन दाम्पत्य पूर्ण संबंधों को बनाए रखने के लिए स्त्री एवं पुरूष में समानता का भाव होना आवश्यक है। असमानता की भावना दोनों के संबंधों को कटु बना देती है। इस समानता को प्राप्त करने के लिए नारी का आत्मनिर्भर होना आवश्यक है। **'उखड़े हुए लोग'** में शरद एक सुख पूर्ण दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने के लिए मानता था कि एक औरत को नौकरी कर स्वावलम्बी व आत्मनिर्भर बनना चाहिए। जिससे वह किसी दवाब में न आकर अपने दाम्पत्य जीवन को मजबूरीवश न ढोये। शरद अपने दाम्पत्य

जीवन को शुरू करने से पहले जया की इच्छा को जानना चाहता है – **"यह निश्चय करो कि विवाहित जीवन तुम चाहती हो या यह कि नहीं। तुम्हारे दिमाग में साफ तो है नहीं कि तुम चाहती क्या हों।"**[3] वह जया की समस्त इच्छाओं को ध्यान में रखता है, क्योंकि वह नारी मुक्ति का समर्थक है। वह जया की इच्छा के विरूद्ध कोई कार्य नहीं करना चाहता। जिससे वह अपने दाम्पत्य जीवन को शुरू करने से पूर्व जया की सहमति प्राप्त करना चाहता है।

समानता के साथ–साथ रिश्ते में विश्वास व प्रेम का होना भी आवश्यक है, अन्यथा इनका अभाव दाम्पत्य संबंध को तोड़ने के लिए कारगर सिद्ध होता है। इस रिश्ते को निभाने के लिए पति–पत्नी में एक–दूसरे के प्रति समर्पण का भाव होना आवश्यक है। **'कुलटा'** उपन्यास में कर्नल तेजपाल अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करते है, जबकि मिसेज तेजपाल अपने दाम्पत्य जीवन से खुश नहीं है – **"मि0 तेजपाल प्राचीन संस्कारों में पले–बढ़े अनुशासन प्रिय व्यक्ति है, मिसेज तेजपाल आधुनिक विचारों की नारी है। उसे स्वछंद रूप से खुले वातावरण में घूमना, गाना, पेंट–शर्ट पहनना व जोर–जोर से हँसना पसंद है।"**[4]

जबकि मेजर तेजपाल की नजरों में – **"ये औरतें कैसी बेशर्म लगती है! अगर बीच से कमर इन्होंने न कस रखी होती तो चाल में जनाना, नखरा और मटक न होती तो पीछे से लड़के और लड़की में फर्क करना मुश्किल हो जाता।"**[5] जिस कारण मिसेज तेजपाल का ऐसे दाम्पत्य जीवन में बँधे रहने से दम घुटता है। एक दिन जब कर्नल तेजपाल कैम्प पर चले जाते है, तो मिसेज तेजपाल अपने पूर्व प्रेमी वायलिन वादक के साथ भाग जाती है। जिस पर मिसेज तेजपाल अपने विचार व्यक्त करते हुए कहती है – **"आप चाहते है इसलिए फूल खिले, इसलिए कोयल बोले, इसलिए झरने बहे। मैं देखती हूँ रूप रंग चाहे जितने अलग हो मिट्टी सब एक है।"**[6] आप पुरूष है इसलिए आप चाहते है कि सभी कार्य आपके अनुसार हो और स्त्री आपके बँधे–बँधाए नियम, कायदे–कानून को स्वीकार करे। एक स्त्री ऐसी बँधी–बँधाई जिदंगी में घुटन महसूस करती है। जिसमें उसके कोई विचार नहीं, कोई अस्तित्व नहीं। फलतः पति–पत्नी के बीच विचारों के मतभेद के कारण उनका दाम्पत्य जीवन नष्ट हो जाता है।

पुरूष जीवन में अपने साथी से प्रेम, त्याग, विश्वास व समर्पण की भावना आदि वस्तुओं की चाह रखता है। जब उसे अपने जीवन में इन वस्तुओं की प्राप्ति नहीं होती तो वह अपने दाम्पत्य जीवन से दूर हो जाता है ऐसा ही **'सारा आकाश'** में द्रष्टव्य है – **"भविष्य में दाम्पत्य सुख की बात, क्रीडा और किलकारियों की बात.... वह भी इस औरत के साथ ? नहीं, नहीं, आज मैं सारे देवताओं और स्वयं**

भगवान को साक्षी करके प्रण करता हूँ कि इस स्त्री के साथ मेरा कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा, कभी समझौता नहीं होगा। हो नहीं सकता। जो अपने को दुनिया में सबसे अक्लमंद समझता है, उससे निभ ही कैसे सकती है...? कभी नहीं.... कभी नहीं... ।''[7]

वहीं **'मंत्रविद्ध'** उपन्यास का नायक तारक इसकी पूर्ति दूसरे बंधन में बँध जाने के पश्चात् करता है। तारक दत्त विवाहित होते हुए भी सुरजीत नाम की एक पंजाबी लड़की से विवाह कर दाम्पत्य बंधन में बँध जाता है व उसे लेकर अपने मित्र मोहन के यहाँ आ जाता है। और यह मोहन से अपने पहले दाम्पत्य संबंध को नकारते हुए कहता है – **''आप विश्वास कीजिए मेरा उस औरत से कोई संबंध नहीं है। पहली बच्ची का गुनहगार मैं जरूर हूँ, लेकिन बाकी का भगवान की कसम खाकर कहता हूँ, मुझे कुछ भी नहीं पता।''**[8] जिस पर मोहन व इन्दु बिल्कुल विश्वास नहीं करते व इन्दु अपने विचार प्रकट करते हुए कहती है – **''आदमी की तो बात मैं एक बार मान सकती हूँ कि वह कुत्ते की तरह सब जगह मुँह मार सकता है, लेकिन वो औरतें कैसी होती हैं जो जानते–बूझते अन्धी हो जाती है, दूसरों का घर तोड़ती हैं। उन्हें दूसरी औरत के दुख–दर्द का बिल्कुल भी ख्याल नहीं आता... अरे.... कल को यही उनके साथ भी तो हो सकता है।''**[9] लेकिन प्रेम के आवेश में बहकर बने उनके नये दाम्पत्य जीवन में भी धन के अभाव में दरार आ जाती है। अर्थ के अभाव के कारण उनके दाम्पत्य जीवन में पहले जैसा प्रेम, विश्वास कुछ भी नहीं रह जाता व विचारों के मतभेद के कारण उनके दाम्पत्य जीवन में अनेकों समस्याएँ आ खड़ी होती है। फलस्वरूप तारक अपने इस संबंध को भी तोड़ने को मजबूर हो जाता है।

अतः इस प्रकार हम देखते है कि पति–पत्नी के जीवन में किसी अन्य के आगमन से, विचारों में मतभेद, अविश्वास आदि के कारण दाम्पत्य जीवन विषादयुक्त हो जाता है।

ख. विवाहेत्तर सम्बन्ध

हमारे समाज की आधुनिक शिक्षा के फलस्वरूप हमारी परंपरागत सामाजिक मान्यताएँ खण्डित होती जा रही है। इस आधुनिक शिक्षा के कारण अर्थ तंत्र की जटिलता, औद्योगिक क्रान्ति, नारी जागरण, व्यक्ति स्वतंत्रता की अपूर्व चेतना का विकास हुआ है। जिस कारण व्यक्ति के जीवन और समाज में बदलाव की स्थितियाँ इस स्तर तक उत्पन्न हो चुकी है कि विवाह के परम्परागत अर्थ अब निरर्थक मालूम पड़ते है।

'वैदिक हिंसा हिंसा न भवति' नामक सम्पादकीय के द्वारा 'राजेन्द्र यादव' का मानना है कि – **''परम्परागत वैवाहिक सम्बन्धों में स्त्री का अपना चुनाव कहीं नहीं है, वह सिर्फ ति को दे दी जाती है और उम्मीद की जाती है कि वह पतिव्रता, सती, स्वामिभक्त और मर्यादाओं का निर्वाह करने वाली होगी। यह उसकी कंडिशनिंग है।''**[10] ऐसी ही स्थिति प्रभा की दृष्टिगोचर होती है। आज भी बहुत से परिवारों में संतान की व्यक्तिगत इच्छा व अनिच्छा को कोई मान्यता नहीं दी जाती। माता–पिता की इच्छा ही उनकी इच्छा होती है। जिस कारण उन्हें अपने परिवार व माता–पिता के दवाब में रहते हुए अनिच्छित कार्यों को करना पड़ता है। जिसके फलस्वरूप वे अपना व्यक्तिगत निर्णय नहीं ले पाते जिसके कारण – **''उसमें दुविधा, आत्मभर्त्सना, अहंकार, अनिर्णय से निर्मित रसासन की अभिव्यक्ति संवादहीनता के रूप में होती है।''**[11]

ऐसा ही **'सारा आकाश'** के नायक समर के साथ हुआ। जहाँ उसका विवाह उसकी इच्छा के विरूद्ध प्रभा से कर दिया जाता है। जहाँ पर उसका आक्रोश संवादहीनता के रूप में प्रभा पर प्रकट होता है – **''मैं उससे बोलूँगा नहीं अगर बोलना ही पड़ा तो मतलब की एक–दो बातें ही, बस ! जब सभी अपना–अपना स्वार्थ देखते है तो मैं भी क्यों ने देखूँ।''**[12]

समर जिसने अभी जीवन को ठीक प्रकार से देखा व समझा भी नहीं। उसके ऊपर प्रभा रूपी एक अनावश्यक भार सौंप दिया जाता। जिससे वह अपने जीवन से क्षुब्ध है – **''देश के समाज–इतिहास ने उसके कैशोर्य के साथ छल किया है। किशोर वय, आदर्श–प्रेरित सकर्मकता आकाश को छू लेने वाली उमंग भरी सकर्मकता की वय होती।..... समर क्षुब्ध है, वह अभी तक पराजित होकर समझदार नहीं बन सका है। आकाश अभी तक उसके लिए संभावना है। वह नहीं मिल रहा है तो वह क्षुब्ध, खीझ, बिफरा है।''**[13]

समर इन बातों को अनदेखा कर केवल एक यही बात याद रखता – **''मुझे इस बात को कभी नहीं भूलना कि मुझे कुछ बनना है जिसके सामने दुनियाँ झुके। जिसकी एक बात देश के लिए आज्ञा हो, भारत महापुरूषों का देश है। राणा प्रताप और शिवाजी का रक्त मेरी धमनियों में बहता है, उसे लजाना नहीं है। उनकी यह परम्परा, संस्कृति की रक्षा की धारा को हमें ही तो चलाना और जीवित रखना होगा। मेरे सामने आज परीक्षा का काल है – हमेशा तो रहेगा नहीं। यहीं तो वे खाइयाँ और रूकावटें है जिनके पार महानता और गौरव के आत्मसम्मान का सौरभ है, अमरता का देश है। यह 'हर्डल रेस' वहाँ तक पहुँचने के चुनौती है।''**[14]

लेकिन समर समाज की परम्परागत धारणाओं के अनुसार चलकर कुछ भी हासिल नहीं कर पाता। जीवन की विसंगतियों ने उसके चारों ओर इतने कड़े पहरे लगा दिए है वह इन घेरों से निकलना चाहकर भी नहीं निकल पाता।

हमारे समाज में प्राचीन काल से चले आ रहे परम्पराओं के अनुसार जहाँ विवाह को दो आत्माओं, दो परिवार का संगम, जन्म–जन्मान्तर का संबंध माना जाता है। वहीं हमारे आज के समाज की युवा पीढ़ी इस पवित्र बन्धन को तोड़ने से भी नहीं हिचकिचाती। **'कुलटा'** उपन्यास की नायिका मिसेज तेजपाल अपने पति मेजर तेजपाल के कड़े अनुशासन एवं स्वभाव से कठोर होने के कारण अपने पूर्व प्रेमी के साथ भाग जाती है – **''किसी वायलिन बजाने वाले की बात उस दिन हुगली के किनारे बताई थी।''**[15]

वह अपने वैवाहिक रूपी पवित्र रिश्ते को तार–तार कर देती है, जिसके परिणामस्वरूप – **''इस गम ने मेजर तेजपाल को पागल कर दिया।''**[16]

इस सम्बन्ध में **डॉ0 पुष्पपाल** सिंह का मानना है कि – **''कहीं पर यह अलगाव, असंतोष और सम्बन्धों की दरकन किसी तीसरी उपस्थिति के कारण है, तो कहीं दूसरे पर व्यर्थ के शक से, कहीं सामान्य नारी के स्तर पर जीवन जीकर पति का सम्पूर्ण प्रेम प्राप्त करने की उत्कट कामना से, कहीं यह काम सम्बन्धों अतृप्ति के कारण है, तो कहीं दाम्पत्य के एक रूटीन में बँध जाने और चौके–चूल्हें तथा बच्चों की किच–किच में फँसे रहकर जीवन के नीरस हो जाने से, कहीं पति द्वारा न समझे जाने की अनाम और अकूत पीड़ा है, तो कहीं अर्थतंत्र के विषधर की फुंकार से जीवन पर निराशा की कालिमा के मडराने से उपजा असंतोष है।''**[17]

ऐसी ही स्थिति मुन्नी के साथ घटित होती है। उसके पति के जीवन में किसी दूसरी स्त्री के आ जाने पर उसका वैवाहिक जीवन तार–तार हो जाता है व उसकी मानसिक स्थिति पागलों की भाँति हो जाती है। व मायके आकर रहने लगती है – **''उसके पति का सम्बन्ध एक ब्राह्मण जाति की स्त्री से था। नौकरानी की तरह अपनी और अपनी उस रखैल की मुन्नी से सेवा कराता और दो–तीन तक खाना नहीं देता। एक दिन सारे शरीर पर बेतों के फूले हुए नीले निशान लेकर मायके आ जाती है, बस तब से यहीं है।''**[18]

वह अपनी फुटी किस्मत को स्वीकार कर वहाँ रहने लगती है लेकिन एक दिन अचानक उसका वही पति उसे लेने आता है तो उसके जीवन में खलबली मच जाती है और उसके पिता उसके ससुराल जाने की घोषणा कर देते है। वह रोते हुए अपने पिता से अपनी भावना को व्यक्त करते हुए कहती है – **''बाबूजी, तुम मुझे अपने हाथ से जहर देकर मार डालो, मेरा गला घोंट दो मुझे वहाँ मत भेजो, बाबूजी। मैं वहाँ मर जाऊँगी... मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ.... पाँव पड़ती हूँ – मुझे कहीं मत जाने दो। बाबूजी, मैं किसी का चौका बरतन कर लूँगी, पीस–कूट लूँगी, मुझे वहाँ मत भेजो उनके साथ।''**[19]

मध्यवर्गीय परिवारों में एक स्त्री का वैवाहिक जीवन कितना ही कटु क्यों न हो उसे ही समझौता करने के लिए विवश किया जाता है जैसा कि बाबूजी की बातों से द्रष्टव्य होता है – **''पगली हुई है, बेटी ! हम लोग क्या कोई गैर है ? तु आधी रात को यहाँ आ जाइयो, कोई ऐसी–वैसी बात देखे तो। यह तेरा घर पहले है, हमारा बाद को। तेरी भलाई के लिए ही तो कर रहे हैं बिटिया ! वहाँ अपना घर है, तू नहीं सँभालेगी तो फिर बिगड़ेगा। तेरी भलाई इसी में है, बेटी ! वहाँ बिरादरी में बदनामी फैलती है, सब लोग उँगली उठाते हैं, किस–किसका मुँह रोकेंगे ?''**[20]

ऐसा कहते हुए मुन्नी को जन्म–जन्मातरों के लिए विदा कर दिया जाता है और मुन्नी के वैवाहिक जीवन का अन्त उसकी ससुराल में हत्या के रूप में होता है। क्योंकि विवाह के बाद लड़की का मायके आकर रहना अच्छा नहीं माना जाता। क्योंकि वह एक पराए घर की अमानत होती है। विवाह के बाद उसे अपने पिता के घर में रहने का कोई अधिकार नहीं होता। इन्हीं धारणाओं से आज भी हमारी मध्यवर्गीय पीढ़ी अभिशप्त है। अपनी पुत्री का वैवाहिक जीवन कटु होते हुए भी उसकी कोई मदद नहीं की जाती क्योंकि वह एक दूसरे घर की अमानत है।

बहुत पहले वैवाहिक जीवन के संबंध में ऐसी धारणा प्रचलित थी कि पति–पत्नी के बीच अपार विश्वास, स्नेह तथा मतैक्य हो तो उनका वैवाहिक जीवन सुस्थिर बना रहेगा। मगर आज ऐसी स्थिति नहीं है। **'मंत्रविद्ध'** का नायक अपने पूर्व विवाह को तोड़े बिना ही अपनी प्रेमिका से दूसरा विवाह कर लेता है। और अपने पूर्व वैवाहिक जीवन पर उँगली उठाते हुए कहता है – **''आप विश्वास कीजिए मेरा उस औरत से कोई सम्बन्ध नहीं हैं। पहली बच्ची का गुनहगार मैं जरूर हूँ, लेकिन बाकी का भगवान की कसम खाकर कहता हूँ, मुझे कुछ भी नहीं पता।''**[21]

मध्यवर्गीय परिवार अपने विवाह सम्बन्धी रीति–रिवाजों व संस्कारों का कट्टर समर्थक होता है। ऐसी ही स्थिति तारक के परिवार में दृष्टिगत होती है – **"तारक का परिवार उसकी तरफ न होकर उसकी पत्नी की तरफ होता है, और अपने पुत्र के विचारों और आदतों का विरोध करता है। दूसरे विवाह के पश्चात् अपनी पत्नी के वहाँ लेकर जाने पर उसके परिवार द्वारा उसे अपमानित कर निकाल दिया जाता है।"**[22] उसका अपनी दूसरी पत्नी पर विश्वास न होने और आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण यह रिश्ता भी अधिक समय तक नहीं टिक पाता।

जब पति–पत्नी एक–दूसरे को भली–भाँति समझते है व पूर्ण रूप से एक–दूसरे पर विश्वास रखते है तो उनकी वैवाहिक रूपी गाड़ी बिना किच–किच के सुखपूर्वक व्यतीत होती है। **'उखड़े हुए लोग'** उपन्यास मैं जया और शरद प्रेम विवाह करते है। उनके वैवाहिक जीवन का सबसे बड़ा आधार उनके वैचारिक मूल्यों में साम्य होना है। उन दोनों के विचार नारी, समाज, परम्परा, जीवन यहाँ तक कि विवाह जैसे मसलों पर भी मिलते–जुलते है – **"हम लोग सम्मिलित जीवन बिताने का आज निश्चय कर रहे है। प्रकृति को अनिवार्य मानकर दो इकाइयों के सामूहिक जीवन की सामाजिक–स्वीकृति का नाम विवाह है।"**[23]

वह दोनों विवाह के उस रूप के विरोधी है – **"जब लड़का सामन्तों की तरह फौज–फाटा लेकर लड़की वालों के घर पर दौड़ने और चौथ वसूलने जाता है।... आग जलाकर एक मृत और साधारणतः दुर्बोध भाषा में, कुछ जाहिलों को बीच में डालकर अर्थहीन वाक्यों को दुहरा–भर लेना, हद दर्जे की जहालत और अन्धविश्वास है।"**[24]

साथ–ही–साथ वह दोनों – **"दोस्तों को दिखाकर फोटो अखबारों में छपाकर यह घोषित करने के भी पक्ष मैं नहीं है कि सारा संसार गवाह रहे – हमने विवाह किया है, सनद रहे और वक्त जरूरत काम आए।"**[25]

उन दोनों के अनुसार – **"विवाह सामाजिक धरातल पर एक व्यक्तिगत मसला है – लेकिन आज का सामाजिक रूढ़ि–जर्जर मिटता हुआ रूप, व्यक्ति के अनुकूल ही नहीं उसके विकास में सबसे बड़ा बाधक है।.... आज विवाह एक समझौता है, और इसके सिवा कुछ हो भी नहीं सकता।"**[26]

वास्तविक रूप में विवाह वह पवित्र बन्धन है जिसमें दो लोग पूर्ण रूप से स्वतन्त्र होते। जब आपस में वह एक–दूसरे के विचारों का, मनोभावों का व मान–सम्मान का आदर नहीं करेंगे तो निश्चित रूप से यह विवाह रूपी समझौता टूट जायेगा। शरद और जया एक दूसरे के प्रति पूर्ण रूप से ईमानदार

रहकर अपने वैवाहिक रूपी जीवन को पूर्ण आनन्द लेते है व पूरे अर्न्तमन से एक–दूसरे के प्रति किए गए विश्वास का पालन करते हैं।

जब युवक व युवती अपने सपनों व इच्छाओं को पूर्ण होते नहीं देखते तो उनका मन अवसाद से ग्रसित हो जाता है या अपने मन के अनुकूल साथी से विवाह न हो पाने के कारण स्वयं को क्षतिग्रस्त कर दते हैं या प्रेम के आवेश में घर से भागकर विवाह कर लेते हैं। वह यह नहीं सोचते कि उनके माता–पिता की उनके विवाह को लेकर कुछ सपने व आकाँक्षाएं होगी। वे तो प्रेम के वशीभूत घर को छोड़कर नए जीवन की शुरूआत के लिए निकल पड़ते है। ऐसा ही **'एक इंच मुस्कान'** रंजना के साथ होता है। वह अपने प्रेमी के बुलावे पर दिल्ली आ जाती है और अपने पिता से साफ–साफ कह देती है– **''उसके विवाह की चिन्ता न करें। जब वह विवाह करेगी तो घर वालों को सूचना दे देगी। हाँ इतना अवश्य है कि साथी मन लायक होना चाहिए। घरवालों की तरफ से तय किए हुए विवाह में उसका विश्वास नहीं।''**[27]

दिल्ली पहुँचने पर अमर भी अपनी कला से समझौता कर रंजना से विवाह को मना कर देता है। जिस पर रंजना अमर से कहती है– **''जो एक व्यक्ति के प्रति ईमानदार नहीं हो सका, वह कला के प्रति क्या ईमानदार होगा? दुनिया में साहित्यकार क्या विवाह करते ही नहीं या करते है तो क्या उनकी कला पथ भ्रष्ट हो जाती है।''**[28]

फिर भी अनेकों संघर्षों से जूझने के पश्चात् रंजना का विवाह अमर से हो जाता है लेकिन अमर इस रिश्ते में ईमानदार नहीं होता। फलस्वरूप उनका वैवाहिक जीवन टूट कर बिखर जाता है।

मृदुला गर्ग के अनुसार – **''वैवाहिक जीवन की दृढ़ता तीन आवश्यकताओं पर अत्यधिक निर्भर है– शारीरिक, भावनात्मक और बौद्धिक। इसमें से किसी एक की भी पूर्ति यदि विवाह द्वारा नहीं होती है, तो व्यक्तित्व चाहे स्त्री का हो या पुरूष का बिखर जाता है।''**[29]

समाज में जैसे अपनी पत्नी के बारे में पुरूष की अपेक्षाएँ होती है, वैसे ही स्त्रियों की भी अपने पति से कुछ अपेक्षाएं होती हूँ। विवाह के पहले अपने मन में अनकों सपने लेकर स्त्री अपने पिता का घर छोड़ पति के घर आती है। यदि उसके ये सपने शीघ्र ही टूट जाए तो वह दुखिनी बन जाती है और उसका वैवाहिक जीवन जाने–अनजाने में टूटने के कगार पर आ जाता है। जैसा कि रंजना के साथ हुआ। पुरूष जिम्मेदारी से दूर भागने के हेतु विवाह के लिए तैयार नहीं होते। जैसे अमर घर–गृहस्थी के बोझ तले दब जाने के एहसास व अपनी कला को समय न दे पाने के कारण विवाह से दूर भागता है

तो कुछ स्त्रियाँ व्यक्ति स्वातत्र्यं के विचारों से विवाह के बंधन में बंधना पंसद नहीं करती अमला भी अपने पति के द्वारा त्यागे जाने पर दूसरा विवाह नहीं करती बल्कि अपने शौक को पूरा करती है– **''इस घटना के बाद ही मैंने पढ़ाई की, संगीत सीखा, चित्रकारी का भी थोड़ा शौक फरमाया घूमना–फिरना सीखा, स्वतन्त्र रूप से कुछ सोचना सीखा, लोगों से मिलना–जुलना सीखा। यों समझ लो नई जिन्दगी पाई।''**[30]

जहाँ विवाह के द्वारा दो परिवारों, दो संस्कृतियों का मिलन होता है, वही आज के समय में विवाह ठीक इनके विपरीत है। जो दो परिवारों की जोड़ने का नहीं बल्कि तोड़ने का काम करते हैं।

इस सन्दर्भ में **डॉ0 रांगेय राघव** कहते हैं कि – **''मेरे सामने तो स्त्री और पुरूषों के सम्बन्धों का वह रूप आदर्श बनकर आता है। जब दोनों ही जीवन के प्रति जागरूक होकर परिवार को इस तरह चलाए जैसे दो बैलगाड़ी को चलाते है।''**[31]

ग. प्रेम सम्बन्ध :–

प्रेम एक ऐसी पवित्र भावना है। जो पुरूष और नारी के परस्पर आकर्षण के फलस्वरूप उत्पन्न होती है। यूँ तो पुरूष अथवा नारी के आकर्षण के अनेकों कोण होते है। जिनसे प्रेम जाग्रत होता है। जैसे– सौन्दर्य, यश, प्यार भरी बातें, करूणा जगाने वाला पत्र आदि। पुरूष अथवा नारी को एक–दूसरे के प्रति आकर्षित करते है।

प्रेम का जो रूप हमें आज के समय में देखने को मिलता है। वह प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। लेकिन प्राचीन समय में प्रेम के लिए जो उत्कट अभिलाषा देखने को मिलती थी। वह आज के समय में नहीं है। पहले के प्रेम में निस्वार्थ भावना दिखाई पड़ती थी। उस समय के प्रेम में प्रेमी, प्रेमिका को या प्रेमिका प्रेमी को उसी रूप में स्वीकार कर लेती थी। जिस स्थिति में वह होता था। लेकिन आज के समय के प्रेम में प्रेमी स्वयं को प्रेमिका के या प्रेमिका स्वयं को प्रेमी के अनुकूल बनाने के लिए कठिन से कठिन परिश्रम करते है और उसको लेकर कई रंगीन सपने संजाते है। लेकिन जो कभी पूरे नहीं होते। यह हमारे प्राचीन प्रेम का ही अभिशाप है कि जिस तरह के प्रेम की बातों को हम किताबों में पढ़ते आये है। उनमें जैसा एकान्त समर्पण भाव और जान देने की जो उत्कट आवेश दिखाई देता है। वह आज के प्रेम में नहीं है।

इसी भावना को व्यक्त करते हुए **'शह और मात'** का उदय सुजाता से अपनी प्रेमिका रश्मि के बारे में कहता है कि मेरी बहन भी मुझसे यही कहती है कि– **''उदय वह लड़की तुम्हें धोखा दे रही है, वह देख रही है कि जब तुम कुछ बन जाओ तो वह भी आकर अपना प्रेम सार्थक कर ले, वरना घाटे का सौदा क्यों करे! प्रेम में कही ऐसे बनियापने के हिसाब–किताब होते होंगे?''**[32]

आज का प्रेम तो इतना अधिक व्यापारी हो गया है कि उसमें हमेशा एक द्विविधा, एक धर्म संकट, ऊपर से दिखावटी और भीतर से निहायती ही हिसाबीपना दिखाई देता है। साथ ही अपनी इस मनोवृत्ति पर ग्लानि होती है कि सब कुछ मिलाकर शायद यह आज के प्रेम की सच्ची तस्वीर है।

प्रेम की ऐसी ही तस्वीर **'एक इंच मुस्कान'** में देखने को मिलती है। जब रंजना को ज्ञात होता है कि अमर अमला से प्रेम करता है तो वह अमर को समझाते हुए कहती है– **''आज भी तुम्हारा सुख मेरे जीवन की चरम कामना है, इसलिए कहती हूँ, जो कुछ भी हो तुम मुझसे कहो। यदि अमला को लेकर तुम सुखी होना चाहते हो, तो मैं स्वयं तुम्हारे जीवन से हट जाऊँगी। तुम एक बार पहले मुँह से कह भर दो कि तुम क्या चाहते हो।''**[33]

जिसके प्रत्युत्तर में अमर कहता है– **''मैं तुमसे कुछ नहीं चाहता रंजना। सब, कुछ तो तुम से ले लिया, अब और क्या चाहूँगा? बस इतना ही चाहता हूँ कि तुम मुझे इतना प्यार मत करो, जिस प्यार का मैं प्रतिदान नहीं दे सकता, वह मेरे लिए बोझ बन जाता है.... एक असह्य बोझ। इसी बोझ के नीचे मैं रात–दिन घुट रहा हूँ। तुम चाहे कुछ न कहो, पर मैं जानता हूँ कि तुम्हें कुछ नहीं दे पाया न घर, न धन, न सुख, न प्यार। तुम्हारे सामने जब अपने को देखता हूँ तो पाता हूँ कि मैं बहुत छोटा हूँ, बहुत नीच हूँ, बहुत स्वार्थी हूँ और यही भावना मुझे पल–पल सालती रहती है। तिल–तिल समर्पित होता तुम्हारा यह व्यक्तित्व, तुम्हारा ऐकान्तिक प्यार ...मुझे मत दो रंजना, बस, और मैं कुछ नहीं चाहता''**[34] तो वही दूसरी ओर अमला जिसके मन में अमर के प्रति प्रेम के अंकुर प्रस्फुटित हो चुके है। लेकिन जिसे वह अभी भी पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं कर पाती। वह उसे केवल मित्रवत प्रेम के रूप में ही स्वीकार करती है और अमर की लेखन की प्रेरणा के रूप में स्वयं को उसके प्रति समर्पित कर देती है – **''वह पत्नी भी बनी है, प्रेयसी भी और मित्र भी ..... पर न वह किसी के जीवन को सँवार सकी, न कोई उसके जीवन को सँवार सका... और सारे सम्बन्ध एक असफल प्रयोग की तरह मन पर एक असह्य बोझ सा छोडकर टूटते चले गए। .... अब वह अमर की प्रेरणा बनेगी .... इस प्रयोग में चाहे सम्बन्ध टूट जाएँ, चाहे वह टूट जाए, पर वह टूटना सार्थक होगा क्योंकि यह सृजनात्मक होगा''**[35]

हमारे समाज में आज भी स्त्री अपने प्रेम को पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं कर पाती, न ही अपने जीवन से सम्बन्धित कोई निर्णय ले पाती है। उसके जीवन से सम्बन्धित सभी निर्णय उसके परिवार वाले लेते है। यहाँ तक कि विवाह जैसे महत्वपूर्ण मामले भी। जिस कारण वह अपने प्रेम को मन ही मन दबा कर रखती है। जो एक दिन आक्रोश बन कर फूट पड़ता है। ऐसा ही **'कुलटा'** उपन्यास में दृष्टिगोचर होता है। एक दिन वह अपने पूर्व प्रेमी के साथ भाग जाती है– **''किसी वाँयलिन बजाने वाले की बात उस दिन हुगली किनारे बताई तो थी।''**[36]

वही आज भी हमारे समाज में स्त्री एवं पुरूषों को लेकर पर्याप्त मात्रा में भेदभाव व्याप्त है। जहाँ पर पुरूष को अपना प्रेम स्वीकार करने व अस्वीकार करने की पूर्ण रूप से छूट होती है। जबकि स्त्री को नहीं। कभी उसे आर्थिक स्थिति के कारण नकार दिया जाता है तो कभी उसकी कुरूपता के कारण।

ऐसा ही **'अनदेखे अनजान पुल'** में दृष्टव्य है जहाँ निन्नी अपनी कुरूपता के कारण दर्शन से अपने प्रेम को अभिव्यक्त नहीं कर पाती, लेकिन जैसे ही उसे दर्शन के विवाह की बात पता चलती है तो स्वयं से कहती है – **''कहाँ उड़ने की कोशिश कर रही थी तू? तेरी कैद तो ये ... ये .... दीवारें हैं, यह छत हैं और ये पुस्तकें हैं ...तुझे कॉलेज जाना है .... और घर लौट आना है ..... तू कहाँ दिल्ली और बम्बई की बातें सोचने लगी थी ... बेवकूफ।''**[37]

उसने दर्शन को पाने के लिए – **''मन–ही–मन श्रद्धा और आस्था की वेदी पर जाने कितनी पूजा मानता की थी और जाने कितनी बार, कितनी रातों अपने पत्रों को याद करके दर्शन के खतों का पाठ किया था – ऐसी पंक्तियाँ, ऐसे प्रसंग और ऐसी व्याख्याएँ खोजी थी, जो उसकी दम तोड़ती आशा को कहीं तो सहारा दे दें।''**[38]

कभी–कभी मनुष्य का प्रेम इतना स्वार्थी होता है कि वह उससे और अधिक पाने की चाह रखता है। पुरूष की प्रवृत्ति ऐसी रही है। जब उसे अपना प्रेम आसानी से प्राप्त हो जाता है तो वह अपने प्रेम की तुलना दूसरों से करके देखता है। देखता है कि उसका प्रेम अन्य को की नजरों में सुन्दर है या नहीं। जिससे कि उसे अपने प्रेम पर गर्व महसूस हो सके। जैसे **'उखड़े हुए लोग'** में शरद पद्मा की सुन्दरता को देखकर उस पर मंत्रमुग्ध हो जाता है – **''साफ खुलता हुआ रंग, जरा तीखे नक्शे, पतली सी नाक, कुछ कसे हुए होंठ, अंडाकार चेहरा, पतली–पतली भँवे जो नाक पर हल्की सी बालों की रेखा से आपस में इस तरह मिली थी, जैसे पौराणिक चित्रों के बीच से पकड़ने वाला धनुष पड़ा हो और उस जगह सावधानी से रखी गई काली सी बिन्दी।''**[39]

जब भी वह पद्मा से मिलता तो सोचता – **"काश जया इस समय साथ न होती तो अच्छा था।"**[40]

स्वार्थी होने के साथ–साथ कभी–कभी यही प्रेम एक तरफ होता है। उनमें से किसी एक को समाज के भय व चिन्ता के कारण अपने प्रेम को स्वीकार करने की हिम्मत नहीं होती, तो वहीं दूसरा निर्भय होकर प्रेम की राह पर बिना किसी डर के आगे बढ़ता जाता है व प्रेम में दिए गए नाम को सहर्ष स्वीकार कर लेता है व उसी नाम से अपनी पहचान बनाता है। सूरज की प्रेमिका 'जायसी' की इन पंक्तियों के द्वारा **"चाँद कहाँ जोत औ करा। सुरज के जोत चाँद निरमरा'। चाँद में अपनी ज्योति कहाँ है ? वह तो केवल सूरज की ज्योति से निर्मल चमकता रहता है।"**[41]

अपने प्रेम को अभिव्यक्त करते हुए कहती है – **"मेरे सूरज, तुम्हारी ज्योति में, तुमसे अलग मैं चाँद की तरह प्रकाशित रहूँ, और मिलने के समय तुम्हारे प्रेम की ज्वलित बाहों में डूबकर खो जाऊँ, यही मेरी आंकाक्षा है, जीवन का लक्ष्य है।"**[42]

जिसके प्रत्युत्तर में सूरज कहता – **"मेरे भाग्य के चाँद ! मेरी चन्दा, मैं सूरज ही सही, लेकिन मेरी सारी भाग–दौड़ जीवन का यह स्पन्दन और गति, प्रकाश और ज्योति केवल तेरे लिए है – केवल तेरे लिए।"**[43]

इन पंक्तियों के द्वारा सूरज अपनी प्रेमिका द्वारा दिए गए नाम को सहर्ष स्वीकार कर लेता है। व प्रेम के नशे में सिर से पाँव तक इस प्रकार डूबा रहता – **"फिर मुझे मिला प्यार–वह भी ऐसा जिसके लिए देवता तक तरसें, राक्षस पाएँ तो देवता बन जाएँ मेरी समझ में नहीं आता था कि मैं अपने सौभाग्य को कहाँ रखूँ। दुनिया का हर प्राणी अपने से ईर्ष्या करता और मुझसे उसे छीनने को आतुर लगता और मैं था कि गरीब के धन की तरह उसे छाती से लगाकर मर जाना चाहता था।"**[44] लेकिन चन्दा का विवाह हो जाने के पश्चात् सूरज की स्थिति अत्यन्त खराब हो जाती है। वह स्वयं को उसकी याद में कष्ट पहुँचाता और मन ही मन उससे बातें करता – **"देख चन्दा, तेरे लिए–तेरे प्यार के लिए, मैं अपने को मिटाए दे रहा हूँ, गलाए दे रहा हूँ। एक दिन चुपचाप यों ही नाम शेष हो जाऊगाँ – तु जान भी न सकेगी। और अच्छा है, न जाने ! तेरे सुख की दुनिया को अपने जले दिल की राख से धुंधला करने मैं नहीं आना चाहता। मैं नहीं चाहता कि मेरा ध्यान तुझे जरा भी दुख पहुँचाए – कभी इच्छा हो तो मेरा नाम ले लेना, बस। मुझे इसी में सबसे अधिक सुख मिलेगा कि तु सुखी है।"**[45]

प्रेम युक्त व्यक्ति को सबसे अधिक दुख तब पहुँचता है, जब वह अपने प्रेम से मिलता है। लेकिन वही प्रेम उसे पहचानने से इंकार कर देता है। ऐसी ही स्थिति सूरज के साथ द्रष्टव्य है – **''भौंचक होकर उसका मुँह खुला रह गया। मैंने फिर याद दिलाया – चन्दा, तुमने मुझे नहीं पहचाना ?..... सूरज ? चन्दा ने शायद पहली ही बार पहचान लिया था। अब उसका मुँह एकदम कठोर हो गया। थानेदार साहब लौट पड़े थे। पूछा – कौन है ? वे कभी चन्दा को और कभी मुझे देखते। आखिर चन्दा बोल उठी – 'पागल है, इसे हटाइए न ! देखिए, कैसी आँखों से देख रहा है? मुझे डर लग रहा है।''**[46]

लेकिन फिर भी सूरज ने अपनी प्रेमिका द्वारा दिए गए नाम को कभी मिटने नहीं दिया उसी नाम से अपनी पहचान बनाई।

आज के समय में प्रेम के विचार, परिभाषाएँ, मान्यताएँ व दूसरों के सोचने के नजरिए बदल चुके है। आज पुरूष अपने नए प्रेम को निभाने के लिए अपने वैवाहिक जीवन को तोड़ने से भी नहीं हिचकता। ऐसा ही **'मंत्रविद्ध'** में द्रष्टव्य है। जहाँ तारक अपने मित्र मोहन से अपने प्रेम को अभिव्यक्त करते हुए कहता है – **''अभी तक यही मशहूर था कि बंगाल की औरतें जादू से भेड़ा बना देती है, पंजाब की कुड़ियाँ भी मंत्र जानती हैं, यह भी तो पता चल गया।''**[47]

जिसका सुरजीत विरोध करते हुए कहती है – **''बिल्कुल झूठ बात है। जादू मैंने इन पर किया था या इन्होंने मुझ पर ? आप ही बताइए, माँ–बाप की इकलौती लड़की, डैडी इतना प्यार करते हैं कि बस, पूछो नहीं, एक तरह घर–भर की मालकिन सब छोड़–छाड़कर इनके साथ यों ही चली आई।''**[48]

लेकिन उनका यह नया–नया प्रेम आर्थिक तंगी के अभाव में चार–दिन में काफूर हो जाता है और वह दोनों कलकत्ता वापस लौट जाते है।

अतः नर–नारी के प्रेम का रूप जो पहले था, वह आज भी है और हमेशा रहेगा, इसे खत्म नहीं किया जा सकता। कारण उसकी वैयक्तिक विवशता है, क्योंकि उम्र के एक पड़ाव के बाद एक–दूसरे के प्रति मन में प्रेम के अंकुर प्रस्फुटित होना स्वभाविक है। प्रेम सभी बन्धनों से ऊपर होता है। जाँति–पाँति धर्म किसी का विचार नहीं किया जाता।

सदंर्भ ग्रन्थ सूची

1. एक इंच मुस्कान पृ0सं0 22, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
2. वही पृ0सं0 221
3. उखड़े हुए लोग पृ0सं0 33, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
4. कुलटा पृ0सं0 423, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
5. वही पृ0सं0 427
6. वही पृ0सं0 409
7. सारा आकाश पृ0सं0 58, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
8. मंत्रविद्ध पृ0सं0 273, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
9. वही पृ0सं0 273–274
10. हंस पत्रिका सितम्बर, 2010, पृ0सं0 5, सम्पादक राजेन्द्र यादव
11. पाखी पत्रिका सितम्बर, 2011, पृ0सं0 164, सम्पादक डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी
12. सारा आकाश पृ0सं0 27, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
13. पाखी पत्रिका सितम्बर, 2011, पृ0सं0 164, सम्पादक डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी
14. सारा आकाश पृ0सं0 26, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
15. कुलटा पृ0सं0 447, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
16. वही पृ0सं0 447
17. हंस पत्रिका अप्रैल 2007, पृ0सं0 26, सम्पादक राजेन्द्र यादव
18. सारा आकाश पृ0सं0 41, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015

19. वही पृ0सं0 82–83
20. वही पृ0सं0 84
21. मंत्रविद्ध पृ0सं0 273, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
22. वही पृ0सं0 285
23. उखड़े हुए लोग पृ0सं0 34, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
24. वही पृ0सं0 34
25. वही पृ0सं0 34
26. वही पृ0सं0 34–35
27. एक इंच मुस्कान पृ0सं0 60, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
28. वही पृ0सं0 61
29. उसके हिस्से की धूप – मृदुला गर्ग पृ0सं0 99–100, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली संस्करण 2002
30. एक इंच मुस्कान पृ0सं0 31–32, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
31. डॉ0 रांगेय राघव एवं गोविन्द शर्मा – संस्कृति और समाजशास्त्र भाग–2, पृ0सं0 177, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर, 1961
32. शह और मात पृ0सं0 263, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
33. एक इंच मुस्कान पृ0सं0 163, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
34. वही पृ0सं0 163
35. वही पृ0सं0 130
36. कुलटा पृ0सं0 447, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015

37. अनदेखे अनजान पुल पृ0सं0 452, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
38. वही पृ0सं0 452–452
39. उखड़े हुए लोग पृ0सं0 138, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
40. वही पृ0सं0 138
41. वही पृ0सं0 250
42. वही पृ0सं0 250–251
43. वही पृ0सं0 251
44. वही पृ0सं0 251
45. वही पृ0सं0 252
46. वही पृ0सं0 254
47. मंत्रविद्ध पृ0सं0 266, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशक प्रा0लि0 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, 2015
48. वही पृ0सं0 266